आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

दैनिक समाचार–पत्र

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 10 • अंक-2756 • उदयपुर, मंगलवार 12 जुलाई, 2022 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

आपका अपना नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर

बल्लारी (कर्नाटक) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान वर्षों से आपके आशीर्वाद से दिव्यांगजन सेवा में रत है। पूरे देश में स्थान–स्थान पर जाकर इसकी शाखाओं द्वारा दिव्यांगजन सहायता शिविर आयोजित किये जा रहे हैं। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 जून 2022 को एस.एस. जैन संघ जैन मार्केट, बल्लारी में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति,बल्लारी रहे। शिविर में कुल रजिस्ट्रेशन 268, कृत्रिम अंग माप 91, कैलिपर माप 37 की सेवा हुई तथा 14 का ऑपरेशन हेतु चयन किया गया।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि श्रीमान् केवल चंद जी विनायिका (अध्यक्ष, आर.एस जैन संघ) अध्यक्षता श्रीमान् कमल जी जैन (अध्यक्ष, तेरापंथ धर्मसंघ), विशिष्ट अतिथि श्रीमान आनन्द जी मेहता (भामाशाह , समाजसेवी), श्रीमान् प्रणीण जी पारख (अध्यक्ष, श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति), श्रीमान् अशोक जी भण्डारी (उपाध्यक्ष, श्री गुरु पुष्कर जैन सेवा समिति)।

डा.अजमुद्धीन जी (ऑर्थोपेडिक सर्जन), डॉ. नेहाश जी मेहता (पी.एन.डो.), डॉ. नाथुसिंह जी, डॉ. गोविन्द सिंह जी (टेक्निीशियन) सहित शिविर टीम में श्री लालसिंह जी (शिविर प्रभारी), श्री मुकेश जी त्रिपाठी उप प्रभारी) श्री महेन्द्र सिंह जी रावत (आश्रम प्रभारी), श्री बहादुर सिंह जी (सहायक) ने भी सेवायें दी।

बिजनोर (उत्तरप्रदेश) में दिव्यांग सेवा

नारायण सेवा संस्थान ने दिव्यांगता –मुक्ति का यज्ञ वर्षो से प्रारंभ किया है। इस प्रयास–सेवा से 4,50,000 से अधिक दिव्यांग भाई–बहिनों को सकलांग होने का हौसला मिला है। लाखों दिव्यांगों को कृत्रिम अंग लगाकर जीवन की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। इस पुण्य कार्य को गति देने के लिये एक और विशाल निःशुल्क दिव्यांग जाँच, उपकरण वितरण तथा कृत्रिम अंग माप शिविर 12 जून को डिग्री कॉलेज नटहौर बिजनोर (उत्तरप्रदेश) में संपन्न हुआ। शिविर सहयोगकर्ता श्री अशोक जी अग्रवाल सा. विष्णु मेडिकल

रहे। शिविर में रजिस्ट्रेशन 28, कृत्रिम अंग वितरण 20, कैलिपर वितरण 11 की सेवा हुई।

उक्त शिविर में मुख्य अतिथि ए.डी.जी.पी. ब्रजलाल जी (जिलाधिकारी सांसद बिजनोर), अध्यक्षता श्रीमान् ओमकुमार जी (विधायक नटहौर), विशिष्ट अतिथि श्री राकेश जी चौधरी (ब्लॉक प्रमुख नहटौर), श्रीमान् मूलचंद जी (विभाग संपर्क प्रमुख), श्रीमान् मुखेन्दर जी त्यागी (जिला मंत्री) , श्रीमती लीना जी सिंघल (पूर्व चेयरमेन धामपूर) रहे।

श्री भंवरसिंह जी (टेक्निशियन) श्री मुकेश जी शर्मा (शिविर प्रभारी), श्री हरिश जी रावत, श्री देवलाल जी मीणा (सहायक) ने भी सेवायें दी।

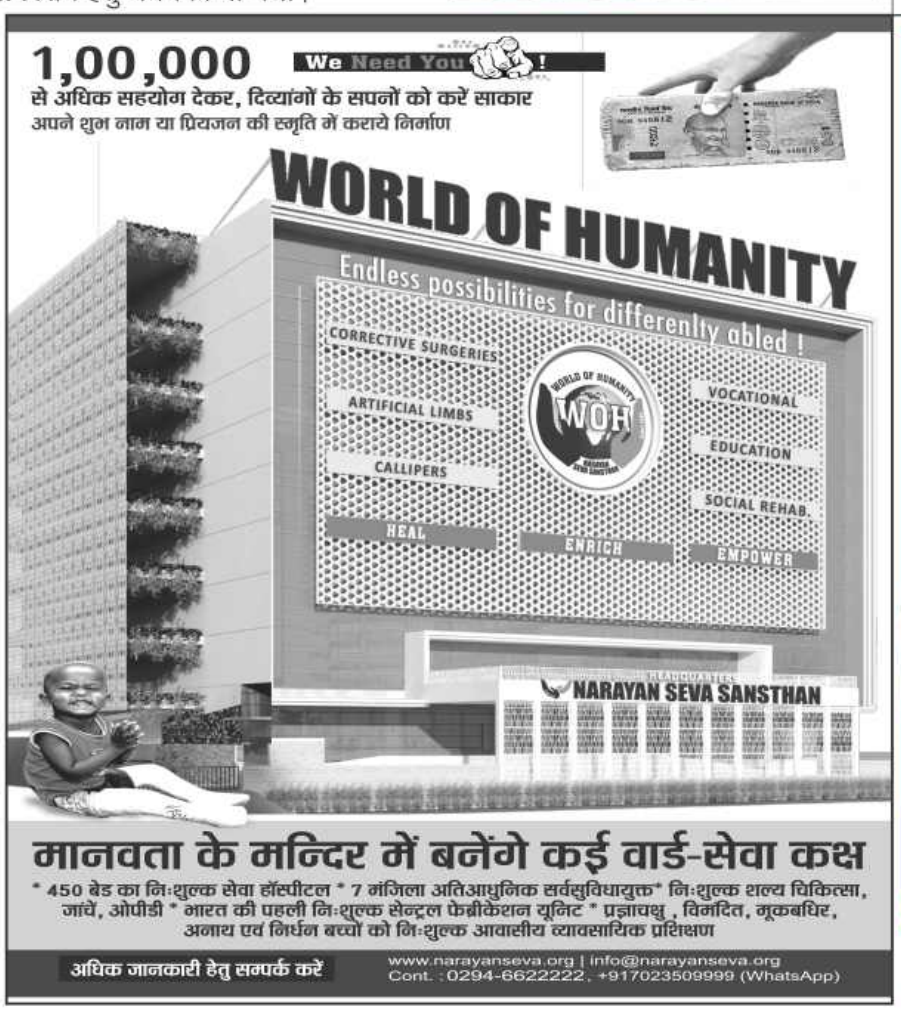

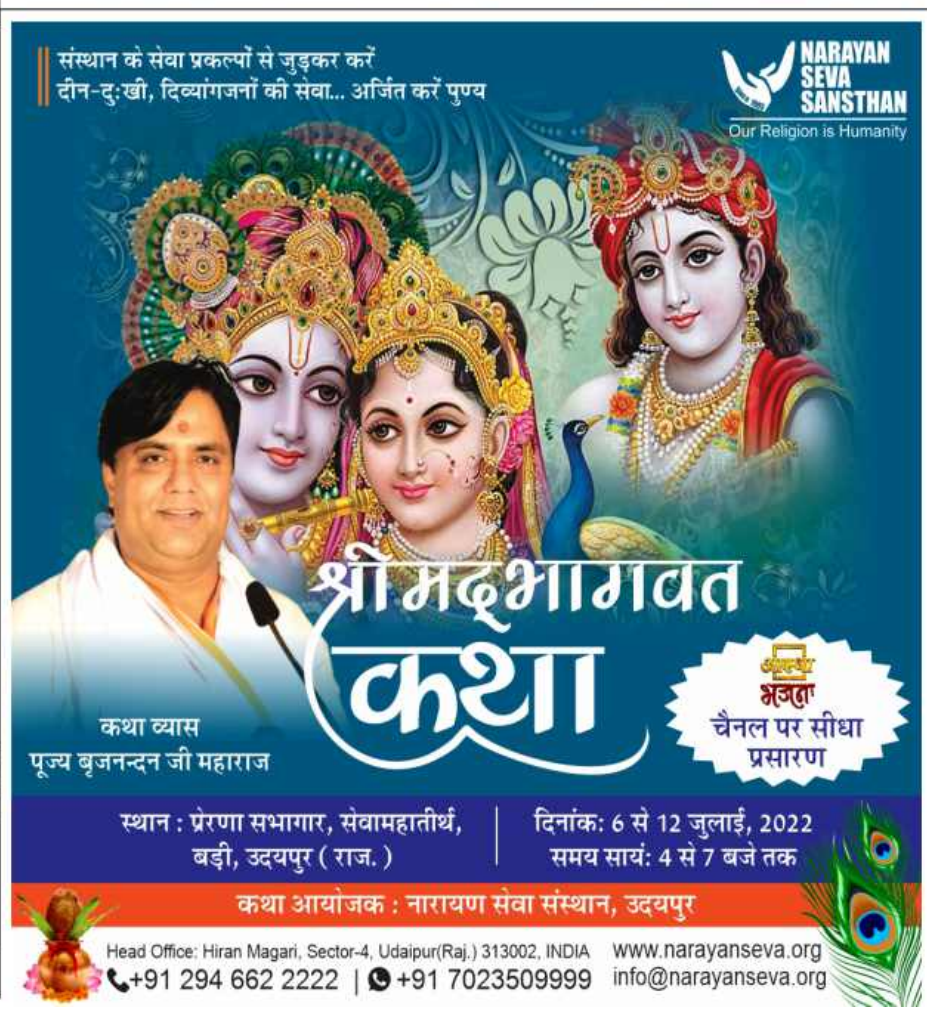

नारायण सेवा में प्राकृतिक चिकित्सालय शुरू

नारायण सेवा संस्थान के सेवा महातीर्थ परिसर में प्राकृतिक चिकित्सालय का उद्घाटन देश भर से आये समाजसेवी दानवीरों की उपस्थिति में पद्मश्री अलंकृत संस्थान संस्थापक कैलाश जी मानव ने किया।

इस अवसर पर मानव जी ने कहा कि मनुष्य को अच्छे स्वास्थ्य का उपहार उसे प्रकृति की ओर से मिला हुआ है। लेकिन वर्तमान समय में व्यक्ति दौड़–धूप, प्रदूषित वातावरण और मशीनी जीवन शैली में इतना व्यस्त हो गया है कि उसे नाना प्रकार की बीमारियों ने जकड़ लिया है। नेचुरोपैथी अच्छा स्वास्थ्य प्रदान करने में बहुत उपयोगी है जोकि हमारे ऋषि मुनियों द्वारा विकसित चिकित्सा पद्धति है। यह जीवन की गुणवत्ता बढ़ाने में भी कारगर है।

उद्घाटन से पूर्व विश्व मंगल की कामना से नारायण महायज्ञ में अतिथियों ने आहुतियां दी। विश्व मंगल की कामना से नारायण महायज्ञ में आहुति देकर सैंकड़ों समाज सेवियो की उपस्थिति में उद्घाटन हुआ। संस्थान अध्यक्ष प्रशांत जी अग्रवाल ने समारोह के विशिष्ट अतिथि उदय सिंह जी–बेंगलुरु ,अशोक कुमार जी– दिल्ली, वल्लभ जी भाई धनानी– अहमदाबाद, श्यामलाल जी मुक्तसर– पंजाब, हरिराम जी यादव– रेवाड़ी, प्रेमसागर जी–मुंबई और शैलेश्वरी देवी जी–उज्जैन का मंच पर स्वागत करते हुए उपस्थित जनों को प्राकृतिक चिकित्सालय की निःशुल्क सुविधाओं की जानकारी दी। निदेशक वंदना जी अग्रवाल ने आभार व्यक्त किया तथा संचालन महिम जी जैन ने किया।

प्रसन्नता है प्रेम का झरना : कैलाश मानव

भगवान श्रीराम प्रसन्न हो रहे हैं और हनुमान जी को कहा हनुमान जी, जाओ सीते को ले आओ। सीते से मिले हुए बहुत दिन हो गये हैं। मुझे सीते का बहुत स्मरण आ रहा है। हनुमान जी अशोक वाटिका में पधारते हैं। लाला, जैसे हनुमान जी ने सेवा की हनुमान जी ने बार–बार कहा –

राम–काज कीन्हें बिन
मोहि कहाँ विश्राम।

ये राम जी काम सेवा है।

सुख दुख के साथी सब बनते,
जीवन होय निहाल।
ये अटूट रिश्तों का बन्धन करता
हे खुशहाल।।

गुरुजी – हनुमान जी की कृपा से काम करते जायेगे तो हनुमान जी साक्षात प्रकट होकर के दर्शन देते है एक मन में बहुत अच्छा आ रहा है।

सत्संग की है बात बालाजी आज थाणे आणो है।

सत्संग की है बात।।

और सत्संग के बात में सीता जी जब पधारी भगवान श्रीराम के चरणों में गिर पड़ी। आपने तो कथा में सुना ही होगा कि भगवान ने एक समय पंचवटी में कहा था सीते तुम अग्नि में प्रवेश करो और तुम्हारी छाया बाहर रख दो। मैं कुछ लीला करना चाहता हूँ। तो प्रभु की लीला हुई। सीता जी ने पुनः अग्नि में प्रवेश किया। और पुनः सीता माताय नमः। सीता राम भगवान की कृपा नमः। अग्नि से मूलरुप से सीता जी प्रकट हो गयी। बोले सीता राम भगवान की जय।

मनोहर के परिवार को मिला सहारा

मैं मनोहर लाल मीणा 38 साल अपने 4 बच्चों व पत्नी के साथ उदयपुर की सरू पंचायत में रहता हूं। तीन साल पहले पास के स्कूल में बिजली ठीक करने गया था। अचानक करंट लगने से कमर और रीढ़ की हड्डी क्षतिग्रस्त हो गई। अब भी चल–फिर नहीं सकता। कमर के नीचे से पूरी तरह विकलांग हूं, इलाज हेतु 2 लाख में खेत भी बेच दिया, फिर भी ठीक नहीं हुआ।

तीन साल से बिस्तर पर पड़ा हूं। घर में कमाने वाला कोई नहीं है, इसलिए बच्चों ने पढ़ाई छोड़ दी। एक बच्चा काम पर जाता है, पत्नी–बच्चा मजदूरी करके सबका गुजारा कर रहे हैं। कई बार पास–पड़ोसी खाना दे जाते हैं। मेरी स्थिति की जानकारी नारायण सेवा संस्थान को सरपंच और पड़ोसियों ने दी। संस्थान ने हमें एक माह की राशन सामग्री (जिसमें आटा, दाल,नमक–मसाले, तेल, शक्कर, चायपत्ती) आदि की मदद की। हमें बहुत राहत मिली। इलाज का आश्वासन भी दिया कि मदद करेंगे। राशन हर माह मिल रहा है।

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति

(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

सम्पादकीय

नीतिकारों ने कहा है कि कभी किसी को धोखा मत दो। हम किसी को धोखा देकर यह सिद्ध करके प्रसन्न हो जाते हैं कि हमने चालाकी से अपना उल्लू सीधा कर लिया। यह नहीं सोचते कि हमने जिसके साथ धोखा किया है, उस पर क्या गुजरेगी? हमारी आदत हो गई है कि हम केवल अपना ही सोचते हैं, दूसरों के बारे में हम क्यों सोचें? यह आदत ठीक है क्या? वास्तव में हमने धोखा देकर अपना कार्य तो सिद्ध कर लिया किन्तु हमने आगे वाले के विश्वास को तोड़ दिया है। उसका विश्वास टूटना उसके लिये बड़ी दुर्घटना है। इस दुर्घटना से वह न केवल आहत होता है वरन् उसका विश्वास भी डगमगा जाता है। यदि हमने किसी का विश्वास डगमगा दिया तो उसका जीवन तो नष्ट कर ही दिया। इसलिये दो अपराध हो रहे हैं –एक तो धोखा देकर और दूसरा विश्वास तोड़कर। इस दोहरे पाप से बचना चाहिये।

कुछ काव्यमय

धोखा देना है अपराध।
यही पाप है निर्विवाद।
अगले का टूटे विश्वास।
भावों का होता है नाश।
हम जिसको समझें चालाकी।
वो केवल होती बैसाखी।
जिससे भावों का हो खंडन।
उन बातों का कर लो मुंडन।

अपनों से अपनी बात

देने में बड़ा आनंद

एक बार एक शिक्षक, अपने एक युवा शिष्य के साथ टहलने निकले। उन्होंने देखा कि रास्ते में पुराने एक जोड़ी जूते उतरे पड़े हैं, जो पास के खेत में काम कर रहे मजदूर के थे। वह काम खत्म कर घर जाने की तैयारी में था। शिष्य को मजाक सूझा, उसने शिक्षक से कहा, ''गुरुजी क्यों न हम ये जूते कहीं छिपा दें।

मजदूर इन्हें यहां नहीं पाकर घबराएगा तो बड़ा मजा आएगा।'' शिक्षक गम्भीरता से बोला ''किसी गरीब के साथ इस तरह का मजाक ठीक नहीं है। क्यों ना हम इन जूतों में कुछ सिक्के डाल दें और छिपकर देखें

कि इसका मजदूर पर क्या प्रभाव पड़ता है।'' शिष्य ने ऐसा ही किया और दोनों पास ही झाड़ियों में छिप गए। मजदूर आ गया। उसने जैसे ही एक पैर जूते में डाला, उसे किसी चीज का आभास हुआ। उसने जूते में देखा कि कुछ सिक्के पड़े थे। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने इधर–इधर देखा। अब उसने दूसरा जूता उठाया, उसमें भी सिक्के थे। उसकी आंखों में आंसू आ गए उसने हाथ जोड़कर कहा, हे भगवान्! समय पर प्राप्त इस सहायता के लिए उस अनजान सहायक का लाख–लाख धन्यवाद। उसकी सहायता के कारण आज मेरी बीमार पत्नी को दवा और भूखे बच्चों को रोटी मिल सकेगी।

मजदूर की बातें सुन शिष्य की आंखें भर आई। शिक्षक ने शिष्य से कहा 'क्या तुम्हारी मजाक वाली बात की अपेक्षा जूते में सिक्का डालने से तुम्हें कम खुशी मिली? ''शिष्य बोला, आपने आज मुझे जो पाठ पढ़ाया है, उसे मैं जीवन भर नहीं भूलूंगा।

–कैलाश 'मानव'

अमूल्य है प्रशंसा

हमारे भीतर अगर धन्यवाद का भाव आ जाए तो जीवन सुखमय हो जाएगा। हर अच्छाई की प्रशंसा करके लोगों के दिलों को जीता जा सकता है। एक परिवार में पति– पत्नी और बच्चा बडे प्यार से रहते थे। पति और पत्नी दोनों जॉब करते थे। गृहस्थी आराम से चल रही थी। एक दिन की बात है कि पत्नी थकी–मांदी ऑफिस से लौटी, उसने जैसे–तैसे भोजन बनाया और रख दिया। देर शाम पति घर लौटा। उसने उस भोजन को प्रेम से खा लिया, परन्तु उसके बेटे को भोजन नहीं भाया।

बेटे ने रात को सोते समय पिता से पूछा पापा ! आज भोजन कच्चा था, फिर भी आपने खा लिया। मम्मी को कुछ नहीं बोला तब पिता ने प्यार से

बेटे के सिर पर हाथ फिराते हुए कहा– आपकी मम्मी रोजाना अच्छा भोजन बनाती है, आज उनकी तबीयत ठीक नहीं थी। इसीलिए अच्छा भोजन नहीं बना पाई, कोई बात मैंने कुछ नहीं कहकर घर में अशांति को रोक लिया। बेटा पिता से एक अच्छी बात सीख गया। लेकिन दूसरी कहानी में एक पत्नी ने पति की थाली में घास–फूंस, कंकर –पत्थर ढककर परोस दिया। पति ने भोजन के लिए ऊपर की थाली हटाई तो घासं–फूंस देखकर आग–बबुला हो गया और जोर–जोर से कहने लगा कि मुझे तुमने जानवर समझा है क्या? पत्नी पलटकर जवाब देती है–पतिदेव !

आज शादी को 5 वर्ष हो गए मैंने अच्छे–अच्छे व्यंजन बनाकर आपको परोसे, परन्तु आपने कभी भी अच्छा या बुरा, कुछ भी नहीं कहा। मुझे लगा कि आप जानवर ही है जो अच्छे को अच्छा कहना नहीं जानते। यह सुनकर पति ने सीख ली कि मुझे उसकी अच्छाई भी बताना चाहिए थी, ताकि वह हमेशा खुश रहती ।

– सेवक प्रशान्त भैया

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित-झीनी-झीनी रोशनी से)

उदयपुर आकर सारी गतिविधियां पूर्ववत चलने लगी। डॉ. नरेन्द्र हड़पावत भारत आ रहे थे उनके गांव प्रतापगढ़ में शिविर आयोजित करने का वादा किया हुआ था। प्रतापगढ़ जाकर उनकी हवेली देखी, उसमें एक गेहूं का गोदाम था, उसी में ऑपरेशन थियेटर स्थापित करने की बात हुई मगर यह स्थान किसी भी दृष्टि से ऑपरेशन के योग्य नहीं था। हड़पावत की भावना हवेली से जुड़ी हुई थी, ऑपरेशन यहीं करवाना चाहते थे। इसी स्थान को मिल जुलकर सबने साफ किया साबुन से धोकर इस काबिल बनाया। अन्ततः ऑपरेशन यहीं किये गये। शिविर सफल रहा तो हड़पावत भी खुशी अमेरिका लौट गये।

एक बार कैलाश किसी मंत्री से मिलने डाक बंगले गया। उससे प्रार्थना की कि पोलियो ऑपरेशन का अस्पताल बनाया है, वे समय निकाल कर जरूर आकर देखें। मंत्री बोले–पोलियो तो हम 10 साल में खत्म कर देंगे–अस्पताल की जरूरत क्या है। कैलाश ने कहा कि पोलियो खत्म हो जाएगा यह तो बहुत अच्छी बात है मगर इस समय जो पोलियो से ग्रसित हैं उनका भी तो इलाज करना जरूरी है। मंत्री कहने लगे–पोलियो तो ठीक होता ही नहीं कैलाश के लिए इस तरह की बात सुनना नया नहीं था। यह आम धारणा थी कि पोलियो तो ठीक हो ही नहीं सकता। कैलाश ने उनसे अनुरोध किया कि एक बार आप स्वयं अपनी आंखों से देखेंगे तो आपकी धारणा बदल जायेगी।

मंत्री अस्पताल में आये पोलियो के ऑपरेशन होते देखे, जिनके ऑपरेशन हो चुके थे उनसे भी मिले, हाल चाल पूछे तो अभिभूत हो गये। कैलाश के प्रयत्नों की प्रशंसा की तथा सरकार की तरफ से हरसंभव मदद का आश्वासन भी दिया।

अंश - 153

शिव आराधना के पावन श्रावण मास में संस्थान से जुड़कर करें दीन दुःखी दिव्यांगजनों की सेवा....और पायें पुण्य

NARAYAN SEVA SANSTHAN
Our Religion is Humanity

कथा आयोजक :
अनिल कुमार मित्तल, अरूण कुमार मित्तल एवं सपरिवार, आगरा

श्रीमद्भागवत कथा

दिनांक:
14 से 20 जुलाई, 2022
समय : सायं
4.00 से 7.00 बजे तक

संस्कार
चैनल पर सीधा प्रसारण

कथा व्यास
डॉ. संजय कृष्ण 'सलिल' जी महाराज

स्थान : श्री खाटूश्याम मन्दिर, जीवनी मंडी, आगरा (उ.प्र.)
स्थानीय सम्पर्क सुत्र :9837362741, 9837030304

Head Office: Hiran Magari, Sector-4, Udaipur(Raj.) 313002, INDIA | www.narayanseva.org
+91 294 662 2222 | +91 7023509999 | info@narayanseva.org

70 के बाद तेजी से क्यों दिखता है उम्र का असर ?

शरीर में 70 के बाद तेजी से कमजोरी आती है। उम्र का असर तेजी से दिखने लगता है, क्योंकि 70 बे बाद त्वचा से मस्तिष्क तक एक जैसे बदलाव होते है। इसकी पुष्टी हाल ही में जब कोई व्यक्ति 40–50 वर्ष की उम्र में होता है तो असामान्य स्टेम कोशिकाओं के विकास से उसके भारीर पर बहुत कम फर्क पड़ता है, लेकिन जब उसकी उम्र 70 साल से ज्सादा होती है तो वही स्टेम सेल्स, रक्त कोि ाकाओं के उत्पादन पर असर करते हैं। शरीर में खून बनने की प्रक्रिया सुस्त हो जाती है। इससे कमजोरी आने लगती है।

प्रभावित होने लगती है क्षमता

म्यूटेशन और हार्मोन में बदलाव शरीर के काम करने की क्षमता को धीरे–धीरे कम करते हैं। सभी अंगो पर असर दिखाई लगता है। फिजिकली एक्टिव रहकर इसके असर को कम कर सकते हैं।

यह है मुख्य कारण

65 वर्ष तक की उम्र में शरीर में बीमारियों से लड़ने के लिए रोग–प्रतिरोधक क्षमता ज्यादा होती है, जो बाद में कमजोर पड़ने लगती है। रक्त बनाने में भाामिल स्टेम सेल्स में समय के साथ म्यूटेशन होता है, जो धीरे–धीरे सामने आने लगता है।

(यह जानकारी विविध स्रोतों से प्राप्त है कृपया चिकित्सक से सलाह अवश्य लें।)

आस की डोर विश्वास की ओर

नारायण सेवा संस्थान ने मेरी आस की डोर विश्वास की ओर मेरी बेटी को नई जिंदगी दी। चिकित्सकों और साधकों ने बहुत ध्यान दिया। परिणाम स्वरूप बेटी को नया जीवन मिल। मैं संस्थान का दिल से बहुत बहुत धन्यवाद करती हूँ। मैं कविता यादव उम्र 23 छत्तीसगढ मुंगेली की रहने वाली हूँ। मेरे पति दुर्गेश यादव दूसरों के खेत में मजदूरी करते हैं। मेरी लड़की गोमिया 3 जन्म से ही एक पैर में टेढ़ेपन से ग्रसित थी। गरीबी के कारण आर्थिक हालात बहुत खराब हैं। लड़की के पैर की परेशानी से सभी बहुत परेशान और निराश थे। उसका बिलासपुर, रायपुर, मुंगेली, कुँवरधर आदि कितनी ही जगहों पर इलाज करवाया। 1 से 2 लाख रुपयों का खर्चा भी हो गया पर कुछ फायदा नहीं हुआ। फिर एक दिन मेरी दीदी की भांजी ने नारायण सेवा संस्थान के बारे में बताया और आस्था चैनल के द्वारा पूरी जानकारी मिली। तब हम बच्ची को लेकर उदयपुर आये। संस्थान चिकित्सकों ने जाँच की फिर 2 मार्च 2022 को पहला ऑपरेशन कर प्लास्टर चढ़ाया गया। दूसरा ऑपरेशन 14 मार्च को हुआ और पैर में रिंग लगाई गई। इसके बाद घर लौट गए। एक माह बाद फिर आये और 19 अप्रैल 2022 को तीसरा ऑपरेशन हुआ। अब बच्ची के पांव की स्थिति में सुधार भी दिख रहा है। हड्डी भी जुड़ रही है। संस्थान का दिल से आभार।

आपश्री का सहयोग मिले : प्रार्थना

भारत के विभिन्न शहरों में 720 स्नेह मिलन
2026 के अंत तक 720 मिलन समारोह आयोजित करने का संकल्प

960 शिविरों द्वारा निःशुल्क जांच एवं उपचार
2026 के अंत तक 960 आर्टिफिशियल लिम्ब केम्प लगाये जायेंगे।

1200 नई शाखाएं
2026 के अंत तक 1200 नई शाखाएं खोलने का लक्ष्य।

120 कथाएं
2026 के अंत तक विभिन्न शहरों में 120 कथाएं आयोजित की जायेंगी।

वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी
2026 के अंत तक वर्ल्ड ऑफ ह्यूमैनिटी का निर्माण पूर्ण होकर 10 हजार से अधिक लोग लाभान्वित होंगे।

नारायण सेवा केन्द्र
आगामी 5 वर्षों में संस्थान के वर्तमान में संचालित सभी केन्द्रों में रोजगारोन्मुखी प्रशिक्षण आरम्भ किये जायेंगे।

विदेश में सेवा प्रकल्पों का विस्तार

26 देशों में पंजीयन
वर्ष 2026 के अंत तक 26 देशों में संस्थान के पंजीकृत कार्यालय खोलने का लक्ष्य

6 से सेवा केन्द्र का शुभारम्भ
6 से अधिक देशों में केन्द्र स्थापित कर संस्थान सेवाओं को देगा विस्तार

20 हजार दिव्यांगों को लाभ
विदेश के 20 हजार से अधिक जरूरतमंद एवं रोगियों को लाभान्वित करने का होगा प्रयास

अनुभव अमृतम्

भाइयों नारायण सेवा संस्थान में निरन्तर रविवार को आमतौर पर रविवार के बीच में भगवान असहाय सहायता शिविर, पौष्टिक आहार वितरण शिविर, चिकित्सा शिविर, वस्त्र वितरण, कम्बल वितरण, बच्चों के पौशाक वितरण शिविर और भी यथायोग्य स्टेशनरी, जूते चम्पल, कई महानुभावों के कुर्ते, धोती भगवान करवा रहा है। विभिन्न जगहों से महानुभाव पधारते रहे। कृपा करते रहे, और इन्हीं कृपा के परिणाम स्वरूप शिविर भगवान करवाता रहा। हम दौड़ते रहे। नाच्यो बहुत गोपाल, गिरधर माने चाकर राखो जी, सांवरिया माने चाकर राखो जी करते रहे हैं। फिर अम्बामाता जो किराये का मकान टेलिफोन ऑफिस ने ले रखा था। डिविजनल एकाउण्टस ने वो वहाँ से छोड़कर के मधुवन पंचवटी वहाँ मकान लिया गया। ऑफिस वहाँ आया, वहाँ से छोड़कर के खूब खुशी के भाव के साथ सेवा कार्य करते थे। यहाँ सीनियर एकाउण्ट ऑफिसर पोस्टिगं हुई। टी.ए. बील पास करना, एल.टी.सी बील पास करना, सेलेरी देना, कितना रूपया आया उसका हिसाब रखना। केशियर हेड क्लर्क भगवान अच्छा काम करवाते रहे। और अब कई गांवों में दस बार, पन्द्रह बार जाने का काम पड़ा, अभी यहाँ जोशियों की भागल, मोकेला, जसंवतगढ़, गोगुन्दा भगवान ने भेजा वो ही बुलाने वाला, वो ही करवाने वाला। इसलिये परमात्मा है निरन्तर है, प्रतिक्षण है रोम रोम में व्याप्त है ध्यान के द्वारा अपने विकारों को दूर करते हैं।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 506 (कैलाश 'मानव')

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।

संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टेन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल 483, सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : ई, डी-71 बप्पा रावल नगर, हि.म. सेक्टर-6, उदयपुर
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. +91-294-6622222,+91-7023509999 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353, • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023